संयुक्त वैज्ञानिक राजभाषा संगोष्ठी एक रिपोर्ट -2018

शीर्षक : कौशल विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी संस्थानों की भूमिका

दिनांक : 20.03.2018

स्थान : राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान परिसर

आयोजक

आयोजन स्थल : राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जटनी परिसर स्थित व्याख्यान कक्ष परसिर का एक दृश्य

पंजीकरण करते हुए प्रतिभागियों का एक दृश्यचित्र

सभागार में उपस्थित प्रतिभागियों का एक दृश्य

उद्घाटन सत्र

यह संगोष्ठी संयुक्त रूप से राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा तथा अनुसंधान संस्थान, भौतिकी संस्थान, सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, भा.कृ.अ.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, जीव विज्ञान संस्थान, भा.कृ.अ.प.-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा आयोजित हुआ था । इस संगोष्ठी में सात संस्थानों से लगभग 130 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। ।

मंचासीन अतिथिगण हैं (बाएं से) डॉ. डी.बी. सिंह,निदेशक प्रतिनिधि, जीविसं, डॉ. जीतेंद्र कुमार सुंदरराय, निदेशक, सीफा, प्रो. एस.एस. बसु, निदेशक, आईएमएमटी, प्रो. सुधाकर पंडा, निदेशक, नाइजर एवं आईओपी, श्री बी बी मिश्र, रजिस्ट्रार, एम्स, श्री आर.के. रथ, रजिस्ट्रार, आईओपी और डॉ. अभय कुमार नायक, रजिस्ट्रार, नाइजर

संगोष्ठी का संचालन करते हुए श्री दिनेश बहादुर सिंह, नाइजर

डॉ. डी. वी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, जीव विज्ञान संस्थान को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

डॉ. जितेंद्र कुमार सुंदरराय, निदेशक, सीफा को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

प्रो. एस.एस. बसु, निदेशक, सीएसआईआर-आईएमएमटी को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

प्रो. सुधाकर पंडा, निदेशक, आईओपी और नाइजर को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

श्री बी. बी. मिश्र, रजिस्ट्रार, एम्स, भुवनेश्वर को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

श्री ऋषि कुमार रथ, रजिस्ट्रार, आईओपी को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

डॉ. अभय कुमार नायक, रजिस्ट्रार, नाइजर को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया जाता है

उद्घाटन सत्र के दौरान द्वीप प्रज्वलन करते हुए अतिथिगण

स्वागत भाषण प्रदान करते हुए डॉ. अभय कुमार नायक, रजिस्ट्रार, नाइजर

(केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान के निदेशक द्वारा प्रेषित संदेश का पाठ करती हुई श्रीमती बिष्णुप्रिया महारणा, हिंदी अधिकारी, सीवा)

(अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए डॉ. डी.वी. सिंह, जीव विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर)

डॉ. डी. वी. सिंह ने अपने वक्तव्य प्रदान करते हुए कहा कि कौशल विकास वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण विषय है । भारत की युवा पीढी को देखते हुए कौशल विकास कार्यक्रम बहुत पहले शुरू हुआ है। औद्योगिक संस्थान जैसे आईआईटी, एनआईटी, आईआईएम जैसे संस्थानों में कौशल को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम किये जाते हैं। जनसंख्या के अनुसार कौशल विकास कार्यक्रम बहुत कम है। कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।

(संबोधित करते हुए प्रो. शुद्धसत्व बसु, निदेशक, आईआईएमटी)

अपने वक्तव्य में प्रो.शुद्धसत्व बसु, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईएमटी ने कहा कि सात संस्थान मिलकर एक संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन करना राजभाषा के क्षेत्र में एक स्वागतयोग्य कदम है । राष्ट्रीय कौशल विकास कार्यक्रम वर्ष 2015 में शुरूआत हुई थी। आम जनता युवाओं के लिए आयोजित कार्यक्रमों से विश्व स्तर पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों को आसानी से समझा जा सकें। तकनीकी की भाषा ऐसी

होनी चाहिए जिससे विज्ञान के परिणाम को जन जन तक पहुंचाया जा सकें और लोग स्वावलंबी बन सकें| आईआईएमएमटी द्वारा स्थापित इनक्यूबेशन केंद्र से कौशल विकास तेजी से बढेगी और यह एक सकारात्मक पहल होगी |यह केंद्र भारत के सर्वांगीण विकास के लिए योगदान देगा |

(डॉ. जितेद्रं कुमार सुंदरराय, कार्यकारी निदेशक, सीफा अपना वक्तव्य प्रदान कर रहे हैं)

डॉ. जितेंद्र कुमार सुंददराय, कार्यकारी निदेशक ने अपने संबोधन के प्रारंभ में सभी आयोजकों को धन्यवाद ज्ञापन दिया | कहाकि यह एक बड़ा मंच है जिससे हम सब एक साथ मिलकर जनता की रोजगार को वैज्ञानिकी तथा तकनीकी ढंग से दुगुना कर सकेंगे | जिससे विश्व इस कार्य की प्रशंसा करेगी| हम सब एक साथ इस शहर के विकास के लिए काम करना चाहिए| अगली बार सीफा में इस प्रकार के आयोजन के प्रस्ताव रखा| पूर्वी भारत के राज्यों के लिए सीफा मछली पालन के कौशल को सिखाने में एक उत्कृष्ट केंद्र है | सीफा लोगों के रोजगार के काम से जुड़ा है और हमेशा लोगों को आर्थिक स्वावलंबन बनाने के साथ क्षेत्र के विकास के लिए प्रयासरत है|

श्री बी.बी. मिश्र,रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर ने अपने वक्तव्य में यह उल्लेख किया कि हमें ऐसी भाषा का प्रयोग करना होगा जिससे लोग आसानी से समझ सकें| हिंदी एक ऐसी भाषा है जिससे भारत में सभी लोग एक दूसरे अपने भाव विनिमय कर सकें| कौशल को कैसे जुड़ा जाए यह विचार मान्यवर प्रधानमंत्री ने 2015 में प्रारंभ किया था| कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से देश के 40 करोड़ लोगों को रोजगार दिया जा सकेगा | अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भी चिकित्सा क्षेत्र में कौशल को विकास करने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजन करता रहता है और भविष्य में भी करता रहेगा| कौशल विकास कार्यक्रम देश के विकास में अग्रणी भूमिका निभाएगी|

(सभागार को संबोधित करते हुए श्री बी.बी. मिश्र, रजिस्ट्रार, एम्स, भुवनेश्वर)

श्री ऋषि कुमार रथ, रजिस्ट्रार, भौतिकी संस्थान , भुवनेश्वर ने अपने संबोधन बताया कि भारत में ओड़िशा एक ऐसा राज्य है जहां देखेंगे वहां कौशल ही कौशल पायेंगे। कौशल का अर्थ नयी तकनीकी है । यह नई तकनीकी पुरी के श्रीमंदिर जगन्नाथ मंदिर से प्रारंभ हुआ था। जगन्नाथ मंदिर बनाने में जिस कौशल का विकास हुआ था। ओड़िशा में व्यावसायिक शिक्षा वंशानुगत है। हिंदी माध्यम से कौशल विकास कार्यक्रम का अनुमान सबको एक साथ जोड़ना है। देश को आगे बढ़ाना है तो प्रत्येक कार्यक्रम राष्ट्रभाषा और राजभाषा के माध्यम से होना आवश्यक है।

(श्री ऋषि कुमार रथ, रजिस्ट्रार, भौतिकी संस्थान अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए)

प्रो. सुधाकर पण्डा, निदेशक, भौतिकी संस्थान और राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एंव अनुसंधान संस्थान ने अपने वक्तव्य में यह बताया कि हमें ऐसी भाषा बोलना चाहिए जिससे सब लोग हमें आद करें। जो सबको अच्छा लगेगा वही खुद को अच्छा लगना चाहिए। चाहे कोई भी भाषा हो जिससे व्यक्ति का विकास हो और देश का विकास हो। जहां तक हिंदी की बात है, हिंदी में काम करने के लिए किसी पर जबरदस्त लदने की जरूरत नहीं है। अंत में संगोष्ठी की सफल कामना की।

(प्रो. सुधाकर पंडा, निदेशक आईओपी और नाइजर संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में वक्तव्य प्रदान करते हुए)

(प्रो. शुद्धसत्व बसु को स्मृति चिह्न करते हुए प्रो. पंडा)

(डॉ. जितेंद्र कुमार सुंदरराय, निदेशक, सीफा को स्मृति चिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(डॉ. डी.वी. सिंह, निदेशक प्रतिनिधि, जीविसं को स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(श्री बी.बी.मिश्र, रजिस्ट्रार, एम्स, भुवनेश्वर को स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(श्री आर.के. रथ, रजिस्ट्रार, भौतिकी संस्थान को स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(डॉ. ए.के. नायक, रजिस्ट्रार, नाइजर को स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(प्रो. सुधाकर पण्डा, निदेशक को स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया जाता है)

(श्री जे आर बिस्वाल, प्रतिनिधि, सिवा को स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है)

(श्री इंद्र भूषण शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, सीफा कौशल विकास और हिंदी भाषा पर वक्तव्य दे रहे हैं)

(श्री अनिल कुमार, आईओपी कौशल विकास में भारत स्थित न्यूट्रिनो ऑब्जरवेटरी का योगदान विषय पर वक्तव्य प्रदान कर रहे हैं)

भारत स्थित न्यूट्रिनो ऑब्जर्वेटरी (India-based Neutrino Observatory) (आईएनओ) कण भौतिकी में शोध के लिए निर्मित विज्ञान परियोजना है।

- इसका उद्देश्य ब्रह्माण्डीय न्यूट्रिनो का अध्ययन करना है।
- न्यूट्रिनो मूल कण होते हैं जिनका सूर्य, तारों एवं वायुमंडल में प्राकृतिक रूप से निर्माण होता है ।

आईएऩओ की अवस्थिति

- तमिलनाडु के थेनी जिले की बोडी पहाडियों में कई संस्थाओं के सहयोग से इस ऑब्जर्वेटरी की स्थापना की जा रही है।

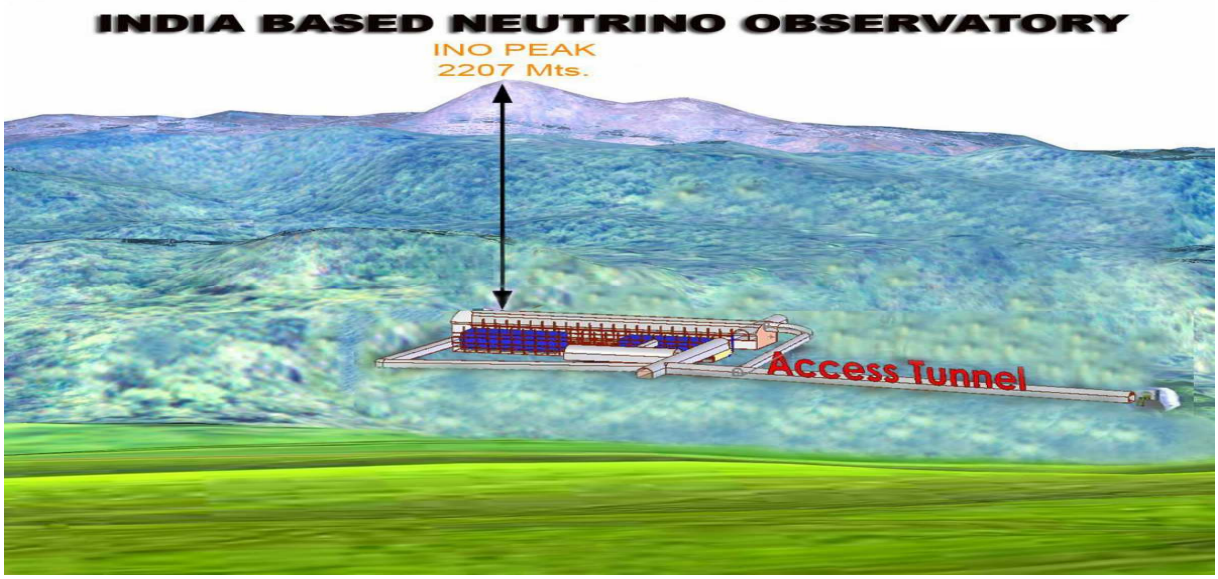

आईएऩओ की संरचना।

(डॉ. बंकिम चंद्र त्रिपाठी,आईएमएमटी, अपशिष्ट पुनर्चक्रण उद्यमियों के लिए एक आकर्षक विक्लप पर अपना वक्तव्य देते हुए)

(कौशल विकास में सीवा का योगदान पर डॉ.अनंत सरकार, सीवा अपना वक्तव्य देते हुए)

(वैश्विक स्तर पर कौशल विकास में शिक्षा की भूमिका पर प्रस्तुति देते हुए डॉ. मनीष कुमार, सीएसआईआर-आईएमएमटी)

(अदभूत् जानवर कुछ रोचक तथ्य पर प्रस्तुति देते हुए डॉ. सौरभ चावला, नाइजर)

(जल कृषकों के कौशल विकास में सीफा की भूमिका पर वक्तव्य प्रदान करते हुए डॉ. धनन्जय कुमार वर्मा, सीफा)

(डॉ. अरूण कुमार, नाइसर भारत में कौशलीकरण और उद्यमशीलता एक परिदृश्य एवं कुछ संस्थान पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए)

(एम्स, भुवनेश्वर के प्रतिनिधि श्री बी.बी. शर्मा कौशल विकास में एम्स का योगदान विषय पर वक्तव्य देते हुए

(सीवा के वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार कौशल विकास में सीवा का योगदान पर प्रस्तुति देते हुए)

(श्री वेंकट राजू, हिंदी अधिकारी, आईएमएमटी को सम्मानित किया जा रहा है)

(जीव विज्ञान के प्रतिनिधि अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए)

(सीवा की महिला वैज्ञानिक अपनी प्रतिक्रिया बताती हुई)

(श्री मकरंद सिद्धभट्टी, सिस्टम्स मैनेजर, आईओपी अपनी प्रतिक्रिया बताते हुए)

(नाइसर के प्रतिनिधि अपनी प्रतिक्रिया बताते हुए)

(सीवा के प्रतिनिधि को स्मृतिचिह्न प्रदान किया जा रहा है)

(आईओपी के प्रतिनिधि श्री भगबान बेहेरा को स्मृति चिह्न प्रदान किया जा रहा है)

(जीव विज्ञान संस्थान के प्रतिनिधि को स्मृतिचिह्न प्रदान किया जा रहा है)

(संगोष्ठी समापन सत्र के दौरान मंचासीन डॉ. अभय कुमार नायक, रजिस्ट्रार, नाइसर और श्री आर के रथ, रजिस्ट्रार आईओपी)

(इस संगोष्ठी से प्राप्त अनुभव को संप्रेषित करते हुए आईएमएमटी के प्रतिनिधि डॉ. मनिष कुमार)

(नाइसर के संयोजक श्री दिनेश बहादुर सिंह को स्मृति चिह्न प्रदान किया जा रहा है)

(संगोष्ठी के प्रतिभागियों का एक फटोचित्र)

समाचार पत्र में संगोष्ठी

ନାଇସରରେ ରାଜଭାଷା ସଂଗୋଷ୍ଠୀ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର

ଲୋକଙ୍କ ପାଖରେ ବିଜ୍ଞାନର ଉପକାରିତା ପହଞ୍ଚାଇବାରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମ

ଭୁବନେଶ୍ୱର, ୨୬।୩ (ନି.ପ୍ର): ଜଟଣୀ ମଦନପୁରସ୍ଥିତ ଭୁବନେଶ୍ୱର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ବିଜ୍ଞାନ ଓ ଅନୁସନ୍ଧାନ ସଂସ୍ଥାନ ପ୍ରେକ୍ଷାଗୃହରେ ସଂଯୁକ୍ତ ରାଜଭାଷା ବୈଜ୍ଞାନିକ ସଂଗୋଷ୍ଠୀ ବୈଠକ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଯାଇଛି। 'ବୈଶ୍ୱିକ ବିକାଶରେ ବିଜ୍ଞାନ ଓ ପ୍ରାଯୌଗିକ ସଂସ୍ଥାନ ଭୂମିକା' ଆଲୋଚନାଚକ୍ରରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିବା ରାଜଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଲୋକଙ୍କ ପାଖରେ ବିଜ୍ଞାନର ଉପକାରିତା ପହଞ୍ଚିବ ବୋଲି ମତ ପ୍ରକାଶ ପାଇଥିଲା।

ନାଇସରର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ସୁଧାକର ପଣ୍ଡା ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ଉଦ୍‌ଘାଟନ କରିଥିଲେ। କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କ ବିଭିନ୍ନ ସଂସ୍ଥାନର ମୁଖ୍ୟ ଏଥିରେ ଭାଗ ନେଇଥିଲେ। ଆଇଆଇଏମଏମଟିର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ସୁଦୀପ ବସୁ ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଭାବେ ଯୋଗଦେଇ ବୈଜ୍ଞାନିକ ତଥ୍ୟ ସାଧାରଣଙ୍କ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚାଇବା ପାଇଁ ରାଜଭାଷା ହିନ୍ଦୀ ଏକମାତ୍ର ମାଧ୍ୟମ ବୋଲି କହିଥିଲେ। ନାଇସରର କୁଳସଚିବ ଡ. ଅଶୋକ କୁମାର ନାୟକ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇଥିଲେ। ସିମାର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ବିଶ୍ୱଜିତ କୁମାର ଭଟ୍ଟାଚାର୍ଯ୍ୟ ବୈଜ୍ଞାନିକ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗ ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଆଇଆଇଟି ଭୁବନେଶ୍ୱରର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ବିଜ୍ଞାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ହିନ୍ଦୀର ଉନ୍ନତି ସହ ଦେଶର ପ୍ରଗତିରେ ସହାୟକ ହୋଇ ପାରିବ ବୋଲି ଏମ୍‌ଏସ କୁଳସଚିବ ବିଦ୍ୟୁତ୍ ମିଶ୍ର ମତ ଦେଇଥିଲେ। ଜୀବ ବିଜ୍ଞାନ ସଂସ୍ଥାନର ପ୍ରଫେସର ଡି.ବି. ସିଂହ ଯୋଗ ଦେଇ ରାଜଭାଷା ଓ ବୈଶ୍ୱିକ ବିକାଶ ଯୋଗୁଁ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଉନ୍ନତି ଦିଗ ବୋଲି କହିଥିଲେ। ଦୁଇ ଦିନ ପୂର୍ବରୁ ଜଟଣୀର ଡମାଲୋଳା ଗ୍ରାମରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ବୈଶ୍ୱିକ ବିକାଶ ସଂସ୍ଥାନକୁ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଉଦ୍‌ଘାଟନ କରିଛନ୍ତି। ଏହା ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ସୌଭାଗ୍ୟ ବୋଲି ସେ ବିଜ୍ଞାନ ସଂସ୍ଥାନର କୁଳସଚିବ ଗଣେଶ ଦାସ ମତ ବ୍ୟକ୍ତ କରିଥିଲେ। ରାଜଭାଷା ସେକ୍ସନ ଅଧିକାରୀ ଦିନେଶ ବାହାଦୁର ସିଂହ ଧନ୍ୟବାଦ ଦେଇଥିଲେ।

SAMAJ Dt. 27/3/18